Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **18.09.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा तथा सुन्दर आचरण का वास्तविक उदाहरण हैं और इसके अनुसार हमारे लिए आपका नमूना भी प्रकाश स्तंभ है। हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पूर्वजों तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में रिवायतें (वृत्तांत) पहुंचाईं क्यूँकि यही बात आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए नसीहत और वास्तविक शिक्षा तथा कुछ समस्याओं का निवारण करने वाली होगी।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में दीन के नवीनीकरण के लिए भेजा है। आपने हमें दीन की वास्तविकता को, उसके मूल आधार को, उसकी वास्तविक शिक्षा को सुन्दर करके दिखाया है तथा नई नई बातों और कुप्रथाओं को दूर करने की नसीहत फ़रमाई। अतः इस ज़माने में आप आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा और सुन्दर आचरण का वास्तविक उदाहरण हैं और इसके अनुसार हमारे लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आचरण भी प्रकाश स्तंभ है हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पूर्वजों तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में वृत्तांत पहुंचाए। पुराने अहमदियों में से अनेक ऐसे होंगे जिन्होंने अपने बुज़ुर्गों से कुछ घटनाएँ तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में कुछ बातें स्वयं सुनी होंगी। उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा तथा आप अलैहिस्सलाम द्वारा लाभान्वित हुए। तो इस प्रकार इन घटनाओं का महत्व, एक स्थान पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने बयान किया है और अपने विशलेषण के अनुसार इन बातों के द्वारा, जो प्रत्यक्षतः छोटी छोटी हैं, अनेक उपदेश दिए हैं और इस्लाम की शिक्षा की मूल बातें ग्रहण की हैं, वे इस समय मैं पेश करूंगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद के समय में अनेक सहाबा जीवित थे इस लिए आपने सहाबा को उन दिनों में ध्यान भी दिलाया, नसीहत भी की अथवा उनके रिश्तेदारों को ध्यान दिलाया कि ये वृत्तांत एकत्र करें। क्यूँकि यही चीज़ आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए नसीहत और वास्तविक शिक्षा तथा कुछ समस्याओं का निवारण करने वाली होगी। हज़रत मुस्लेह मौऊद एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि एक बात जिसकी ओर मैंने इस वर्ष विशेष रूप से जमाअत को ध्यान दिलाया है वह बात क्या है, कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हालात और आपके कथन सहाबा के द्वारा एकत्र कराए जाएँ। फ़रमाते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक छोटी से छोटी बात भी याद हो, उसका इस बात को छिपा कर रखना और दूसरे को न बताना एक क़ौम के प्रति विश्वासघात है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ बातें छोटी होती हैं परन्तु कई छोटी बातें परिणाम की दृष्टि से बड़ी महत्व पूर्ण होती हैं। अब यह कितनी छोटी सी बात है जो हदीसों में आता है कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक बार कद्दू पका तो आपने बड़े चाव से उस सालन में से कद्दू के टुकड़े निकाल निकाल कर खाने शुरू किए यहाँ तक कि सालन में कोई टुकड़ा कद्दू का न रहा और आपने फ़रमाया कि कद्दू बड़ी उत्तम चीज़ है। आप फ़रमाते हैं कि प्रयक्षतः यह एक छोटी सी बात है सम्भव है कि कई अहमदी भी सुनकर यह कह दें कि कद्दू के वर्णन की क्या आवश्यकता थी और आजकल पढ़े लिखे भी अधिक बनते हैं उनका इन बातों की ओर ध्यान नहीं होता अथवा वे समझते हैं कि छोटी सी बात है परन्तु इस छोटी सी बात से इस्लाम को कितना अधिक लाभ प्राप्त हुआ। हम आज इस ज़माने में उन बुराईयों का अनुमान नहीं लगा सकते जो मुसलमानों में प्रचलित हुईं परन्तु एक ज़माना इस्लाम पर ऐसा आया है जब हिन्दुस्तान में हिन्दु संस्कृति ने मुसलमानों को प्रभावित किया और इस प्रभाव के कारण वे इस भ्रम में पड़ गए कि नेक लोग वे होते हैं जो गन्दी चीज़ें खाएँ, जो अच्छे आहार न खाएँ, जो उत्तम प्रकार के पदार्थ न खाएँ, नेकी का स्तर यह है। क्यूँकि यही भिक्षुओं तथा जोगियों का चलन है और जब भी वे किसी को अच्छा खाना खाते हुए देखते हैं तो कहते हैं कि यह बुज़ुर्ग किस प्रकार कहला सकता है अर्थात कि यह धारणा ही नहीं कि कोई बुज़ुर्ग कहलाए और फिर अच्छा खाना भी खा सके। आप एक घटना बयान फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल मस्जिद अक़सा में दर्स देकर वापस अपने घर तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आपको एक डिप्टी साहब मिले जो रिटायर्ड और हिन्दू थे। उन्होंने किसी से सुन लिया था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पुलाव खाते हैं तथा बादाम का तेल प्रयोग करते हैं। अर्थात सदैव नहीं, जब भी मिल जाए, उपलब्ध हो,

खाते हैं जब पका हो और बादाम का तेल प्रयोग करते हैं। वह उस समय अपने मकान के बाहर बैठा था, हिन्दू। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल को देखकर कहने लगा कि मौलवी साहब एक बात पूछनी है। मौलवी साहब ने फ़रमाया, हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने, कि फ़रमाओ क्या बात है? वह हिन्दू कहने लगा, जी बादाम का तेल और पुलाव खाना उचित है? हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने फ़रमाया कि हमारे धर्म के अनुसार ये चीज़े खानी उचित हैं, हमें तो कोई रोक नहीं। वह कहने लगा मेरा अभिप्रायः यह है कि ऐ फ़क़ीरा नूँ खानी जायज़ ऐ। आप रज़ीअल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हमारे धर्म में तो फ़क़ीरों के लिए और सबके लिए जायज़ है जो भी बुज़ुर्ग कहलाने वाले हैं। कहने लगा अच्छा जी, और यह कह कर चुप हो गया। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं, देखो उस व्यक्ति को बड़ी आपत्ति यही सूझी कि हज़रत मिर्ज़ा साहब मसीह मौऊद और महदी किस प्रकार हो सकते हैं जब वे पुलाव खाते हैं और बादाम का तेल प्रयोग करते हैं। यदि सहाबा का भी वैसा ही विवेक होता जैसा आजकल अहमदियों का है और वे कद्दू की चर्चा हदीसों में न करते तो कितनी महत्व पूर्ण बात हाथ से जाती रहती। हदीसों में आता है कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार जुज़्अः के दिन अच्छा सा जुब्बा पहन कर मस्जिद में आए। अब यदि कोई ऐसा पैदा हो जो यह कहे कि अच्छे कपड़े न पहनना फ़क़ीरों की पहचान है, बुज़ुर्गों की निशानी है तो हम उसे हदीस के द्वारा बता सकते हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुज़्अः के दिन बड़े ध्यान पूर्वक सफ़ाई करते और अच्छा तथा उत्तम लिबास पहनते बल्कि आप सफ़ाई का इतना ध्यान रखते, इतनी पाबन्दी फ़रमाते कि कुछ सूफ़ियों ने जैसे शाह वली उल्लाह साहब मुहद्दिस दहलवी हुए हैं, यह तरीक़ा अपनाया हुआ था कि वे हर दिन नया जोड़ा पहनते थे चाहे वह धुला हुआ होता और चाहे बिल्कुल नया होता। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का व्यक्तित्व अति साधारण था, बहुत सी बातों का उनको ध्यान नहीं रहता था और काम की अधिकता भी रहती थी। इस लिए कई बार जुज़्अः के दिन आप कपड़े बदलना और स्नान करना भूल जाते थे और उन्हीं कपड़ों में जो आप पहने हुए होते थे जुज़्अः पढ़ने चले जाते थे। अब यह सादापन ही था यह कोई अभिव्यक्ति नहीं थी कि अवश्य ही फ़क़ीरों का लिबास होना चाहिए ऐसा, अथवा बुज़ुर्ग कहलाने के लिए आवश्यक है कि लिबास न बदला जाए बल्कि काम में व्यस्त होने के कारण ध्यान नहीं रहता था। परन्तु अब हमारे ज़माने में सूफ़ी होने का अर्थ यह हो गया है कि इंसान गन्दा रहे। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि इस बात का यदि समीकरण बनाया जाए तो यूँ बनेगा कि जितना गन्दा उतना ही ख़ुदा का बन्दा। यद्यपि इंसान जितना गन्दा हो उतना ही ख़ुदा तआला से दूर होता है। इसी कारण से हमारी शरीअत ने अनेक अवसरों पर स्नान अनिवार्य किया है तथा सुगन्ध लगाने को कहा है और दुर्गन्ध वाले पदार्थ खाकर मज्लिसो में आने को वर्जित किया है, मस्जिद में आने को मना किया है। अर्थात रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी से दुनिया लाभान्वित होती चली आई है और लाभ प्राप्त करती चली जाएगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हालात से भी दुनिया लाभ प्राप्त करेगी और हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम उनको एकत्र कर दें। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि एक नौजवान ने मुझे बताया कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सहाबी हूँ परन्तु मुझे इसके अतिरिक्त कोई बात याद नहीं कि एक दिन जब मैं छोटा सा था मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हाथ पकड़ लिया और आपसे हाथ मिलाया और थोड़ी देर तक मैं आपका हाथ अपने हाथ में लिए बराबर खड़ा रहा। कुछ समय पश्चात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हाथ छुड़ा कर किसी अन्य कार्य में व्यस्त हो गए। अब प्रत्यक्षतः यह एक छोटी सी बात है परन्तु बाद में इन्हीं छोटी छोटी घटनाओं से बड़े बड़े महत्व पूर्ण परिणाम आदान किए जाएँगे। उदाहरणतः यही घटना ले लो। इससे एक बात यह प्रमाणित होगी कि छोटे बच्चों को भी बुज़ुर्गों की मज्लिसों में लाना चाहिए। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में लोग अपने बच्चों को ज़ी आपकी मज्लिसों में लाते थे। सम्भव है कि आगे किसी ज़माने में ऐसे लोग भी पैदा हो जाएँ जो कहें बच्चों को बुज़ुर्गों की मज्लिसों में लाने से क्या लाभ है इन मज्लिसों में केवल बड़ों को जाना चाहिए। क्यूँकि जब दर्शन-शास्त्र आता है तो इस प्रकार की अनेक बातें पैदा हो जाती हैं और यह कहना आरम्भ कर दिया जाता है कि बच्चों ने क्या करना है। अतः जब भी ऐसा विचार उत्पन्न होगा यह बात उनकी सोच का खंडन कर देगी और फिर इसका और अधिक समर्थन इस प्रकार हो जाएगा कि हदीसों में लिखा है कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मज्लिस में भी सहाबा अपने बच्चों को लाते थे। इसी प्रकार इस वृत्तांत से यह भी मार्ग दर्शन होता है कि जब कोई काम हो तो अपना हाथ छुड़ा कर काम में व्यस्त हो जाना चाहिए। आज हम इन बातों का महत्व नहीं समझते परन्तु जब अहमदी फ़िक़्ह (इस्लामी अहमदी धर्मशास्त्र) अहमदी तसव्वुफ़ (आत्मा परमात्मा में चिंतन) तथा अहमदी दर्शन शास्त्र बनेगा तो उस समय ये छोटी नज़र आने वाली बातें महत्व पूर्ण बन जाएँगी और आज भी इनकी आवश्यकता अनुभव की जाती है और बड़े बड़े दर्शन शास्त्री जब इन घटनाओं को पढ़ेंगे तो कूद पड़ेंगे अर्थात आश्चर्य चकित होकर प्रसन्नता से उछल पड़ेंगे तथा कहेंगे कि ख़ुदा इस बात को बयान करने वाले को अच्छा प्रतिफल प्रदान करे कि उसने हमारी एक पेचीदा गुत्थी सुलझा दी। जब इस प्रकार के मामले सामने आएँगे ऐसी घटनाएँ सामने आएँगी जिनसे समस्याओं का निवारण होता हो तो दर्शन शास्त्री इसके बजाए कि इधर उधर देखें, जिनको दीन से प्रेम है वे उसको दुआ देंगे, इस वृत्तांत के बयान करने वाले को। फिर आप फ़रमाते हैं, यह ऐसा ही वृत्तांत है जैसा हम हदीसों में पढ़ते हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार सजदे में गए तो हज़रत हसन रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु जो उस समय छोटे बच्चे

थे आपकी गर्दन पर टाँगें लटका कर बैठ गए और रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस समय तक सिर नहीं उठाया जब तक वे स्वयं अलग न हो गए। अब यदि कोई इस प्रकार का काम करे तो सम्भव है कुछ लोग उसे अधर्मी बताएँ और कहें कि उसे ख़ुदा की इबादत का ध्यान नहीं, अपने बच्चे की भावना का ध्यान है परन्तु ऐसा व्यक्ति जब भी यह घटना पढ़ेगा तो उसे मानना पड़ेगा कि उसकी सोच अनुचित है और वह चुप कर जाएगा क्यूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उदाहरण सामने है। फ़रमाते हैं कि तुम्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जिस बात का ज्ञान है, वह छोटी सी है बल्कि चाहे कितनी ही छोटी हो, बता देनी चाहिए। चाहे इतनी ही बात हो कि मैंने देखा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चलते चलते घास पर बैठ गए क्यूँकि इन बातों से भी बाद में महत्व पूर्ण बातें ग्रहण की जाएँगी। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बार कुछ दोस्तों के संग बाग़ में गए और आपने फ़रमाया आओ बेदाना खाँए (जो शहतूत की एक प्रजाति है) अतः कुछ दोस्तों ने चादर बिछाई और आपने वृक्ष झड़वाए और फिर सब एक स्थान पर बैठ गए तथा उन्होंने बेदाना खाया। जब बड़े बड़े घमंडी शासक आएँगे तथा वे अन्य लोगों के संग बैठ कर खाने में कुछ अपमान अनुभव करेंगे तो उनके सामने हम ये पेश कर सकेंगे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो सरलता पूर्वक अपने दोस्तों के साथ मिलकर खाया पिया करते थे तुम कौन हो जो इसमें अपना अपमान अनुभव करते हो। तो कुछ बातें यद्यपि छोटी होती हैं परन्तु इनके द्वारा भविष्य में बड़े महत्व पूर्ण धार्मिक, राजनैतिक एंव सामाजिक समस्याओं का निवारण होता है।

आप, अर्थात हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चेहरा देखने अथवा आपकी संगत में बैठने का सुअवसर मिला हो उन्हें चाहिए कि वे प्रत्येक बात, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, लिख कर सुरक्षित कर दें। उदाहरणतः यदि कोई व्यक्ति ऐसा है जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिबास का स्टाईल याद है तो वह भी लिख कर भेज दे। आपने उस ज़माने में फ़रमाया और इसके बाद फिर सहाबा ने अपने वृत्तांत एकत्र भी करने आरम्भ किए, लिखवाने आरम्भ किए और बहुत सी घटनाएँ रजिस्टर बन चुकी हैं सहाबा के वृत्तांतों की, इनको एक बार मैं बयान भी कर चुका हूँ। तो इस प्रकार ये वृत्तांत एकत्र हो रहे हैं इन्शाअल्लाह तआला जमाअत के सामने पेश भी हो जाएँगे किसी समय।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि इन बातों से एक लाभ यह होगा कि यदि भविष्य में ऐसे लोग पैदा हो जाएँ जो कहें, उदाहरणतः एक और छोटी सी बात है कि नंगे सिर रहना चाहिए तो उनके विचारों का खंडन हो सके। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें मौजूद हैं अब एक बात नंगे सिर रहना भी है, साधारणतः लोग पढ़ते हैं नामज़े इत्यादि नंगे सिर, कई बार पढ़ लेते हैं, तो इन वृत्तांतों द्वारा इस ओर भी ध्यान होता है क्यूँकि अनेक घटनाएँ इस प्रकार की भी हैं जिसमें मस्जिद के आदाब, नमाज़ के आदाब, बड़ी मज्लिस में बैठने के आदाब का वर्णन होता है। तो आप फ़रमाते हैं कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसें उपलब्ध हैं और आप ही शरीअत लाने वाले नबी हैं अर्थात शरीअत जारी करने वाले आप ही हैं परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि निकट के मामूर (ईशदूत) की बातें शरीअत लाने वाले नबी की बातों की सत्यता प्रमाणित करने वाली समझी जाती हैं, इनकी प्रमाणिकता करने वाली होती हैं। आजकल यह कहा जाता है कि फ़िक़ह (इस्लाम का धर्मशास्त्र) की जिन बातों के अनुसार इमाम अबू हनीफ़ा ने कार्य किया वे अधिक प्रमाणिक हैं। इसी प्रकार आगे के ज़माने में रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन हदीसों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आचरण से सत्य घोषित किया है उन्हीं को लोग सच्ची हदीसें समझेंगे और जिन हदीसों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वज़ई बताया है अर्थात घड़ी हुई, स्वयं बनाई हुई हैं अथवा प्रमाणिकता नहीं है उनकी, उन हदीसों को लोग झूठा समझेंगे। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ये बातें भी ऐसी हैं, महत्व पूर्ण हैं, जैसी हदीसें। क्यूँकि ये बातें हदीसों की सत्यता या झूठ ज्ञात करने का एक मापदंड होंगी।

इसी के संदर्भ में आप फ़रमाते हैं कि इमाम बुख़ारी की आज दुनिया में कितनी प्रतिष्ठा है परन्तु यह सम्मान इस कारण से है कि उन्होंने दूसरों से वृत्तांत एकत्र किए हैं। इस लिए जो सहाबा की संतान हैं यदि उनके पास बातें हों तो उनको भी आगे देना चाहिए। यदि उनकी प्रमाणिकता अन्य बातों द्वारा प्रमाणित हो गईं तो उनको उसमें शामिल भी किया जा सकता है। सम्भव है कि कुछ बातें पूरे रजिस्टर में न आई हों तथा सहाबा के वंशों में ये वृत्तांत चल रहे हों तो वे लिख कर भिजवा सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तो हर बात ही ज्ञान का भंडार लिए हुए है जो हमारे लिए आवश्यक है और आचरण की तर्बियत के लिए भी अनिवार्य है क्यूँकि इसमें तर्बियत के अनेक बिन्दु निकल आते हैं, क़ुरआन करीम की आयतों की व्याख्या हो जाती है और हदीसों की व्याख्या हो जाती है और इसके द्वारा हमें फिर लाभ प्राप्त होता है। जो भी अहमदी इसे सुनेगा, किसी के द्वारा सुनेगा, वह लाभान्वित होगा और फिर निःसन्देह इनको एकत्र करने वाले के लिए दुआएँ भी करेगा। अतः यह एक बड़ी महत्व पूर्ण बात है जो कई बार इंसान इस पर पूरा ध्यान नहीं देता। एक अन्य घटना मैं इस समय बयान करता हूँ जो आज भी कुछ आपत्ति करने वालों का जवाब है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आरज़्भ से ही इस्लाम की उन्नति की एक तड़प थी और चाहते थे कि मुसलमान अपने कर्मों का सुधार करें और कर्मों के सुधार के लिए सबसे आवश्यक जो है वह अल्लाह तआला की इबादत की ओर ध्यान देना है, नमाज़ें पढ़ना है। इस लिए आपने क़ादियान के रहने वाले जो मुसलमान थे उनके लिए एक व्यवस्था फ़रमाई कि वे मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ा करें। स्वयं आदमी भेज भेज कर उनको मस्जिद में बुलवाना शुरू किया। अधिकतर ज़मीन्दार पेशा थे, निर्धन लोग थे। उन्होंने यह बहाना बनाना करना शुरू कर दिया कि नमाज़ें पढ़ना अमीर लोगों का काम है, हमारा नहीं, हम ग़रीब लोग हैं, कमाएँ या नमाज़ें पढ़ें। मज़दूरी करें या नमाज़ें पढ़ते रहेंगे पाँच समय की, तो आपने फिर यह प्रबन्ध किया। कहते हैं कि यदि न करेगें मज़दूरी तो फिर भूखे रहेंगे। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह व्यवस्था कर दी कि ठीक है तुम नमाज़ें पढ़ने आया करो, एक समय का खाना तुम्हें मिल जाया करेगा। इस प्रकार कुछ दिनों तक, इस घोषणा के बाद खाने के लिए पच्चीस तीस आदमी मस्जिद में नमाज़ के लिए आ जाया करते थे परन्तु अन्त में सुस्त हो गए और केवल मग़रिब की नमाज़ के समय, जिस समय खाना बाँटा जाता था, उस समय आ जाते थे। अन्ततः यह क्रम फिर बन्द करना पड़ा। अब आप फ़रमाते हैं कि देखो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह शौक़ था किस लिए? ताकि इस्लाम का वास्तविक चित्र नज़र आए। अतः इस बात को हमें याद रखना चाहिए कि यह तड़प जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की थी अपने दावे से पहले भी तथा बाद में भी, बार बार इसकी ओर ध्यान दिलाया कि नमाज़ों की ओर आओ, जमाअत के साथ नामज़ें पढ़ो, मस्जिदें आबाद करो। मस्जिदें तो अब हमारी अल्लाह के फ़ज़्ल से दुनिया में हर स्थान पर बन रही हैं परन्तु उनकी आबादी की ओर जैसा ध्यान होना चाहिए, वह नहीं है, कई स्थानों से शिकायतें आती हैं। इसी प्रकार बल्कि रबवा में, क़ादियान में, पाकिस्तान की विभिन्न मस्जिदों में वहाँ के रहने वाले अहमदी हैं, उनको चाहिए कि अपनी मस्जिदों को आबाद करें। इसी प्रकार विश्व के अन्य देशों में अपनी मस्जिदों को आबाद करने का प्रयास करें। दूसरे इस बात का भी यहाँ जवाब मिल जाता है, इस आपत्ति का भी, कुछ लोग कह देते हैं, लिखते हैं मुझे भी कि मस्जिदों में लाने के लिए, नौजवानों को लाने के लिए वहाँ उन्होंने खेलों की व्यवस्था कर दी है कि लड़के शाम को आएँ और खेलें और मानो खेल का लालच देकर नमाज़ पढ़ाई जाती है। तो यह तो, कोई ऐसी बात नहीं है। इसी प्रकार कुछ लोग कहते हैं कि कुछ प्रोग्रामों पर खाने का प्रबन्ध होता है तो लोग प्रोग्रामों में आ जाते हैं अथवा नमाज़ें पढ़ने के लिए आते हैं तो इस लिए खाना खाते हैं। यह तो एक कुधारणा है जो कुछ लोग करते हैं। परन्तु मस्जिदों के साथ साथ जहाँ हॉल बनाए गए या कुछ मुरब्बी, मुबल्लिग़ अथवा स्वयं नौजवान हैं तथा खेलने वाले हैं उन्होंने ग्राउंड में खेलना शुरू किया, नौजवानों को एकत्र करना शुरू किया। इस प्रकार इससे एक लाभ तो हो रहा है कि मस्जिदें उस समय से, कम से कम एक दो नमाज़ों के लिए, उन नौजवानों में ध्यान भी पैदा होता है तथा मस्जिदें भी आबाद होती हैं। इस लिए यह कहना कि यह कोई बुराई है कि मस्जिदों के साथ खेलों के लिए क्यूँ हॉल बना लिए गए अथवा मस्जिद में लाने के लिए, कुछ आयोजनों पर लाने के लिए खाने के प्रबन्ध क्यूँ किए गए, ये अनुचित आक्षेप है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आचरण से प्रमाणित है कि इस प्रकार हो सकता है और होने में कोई बुराई नहीं।

ख़ुत्बः जुज़्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने दो व्यक्तियों के निधन का समाचार देते हुए जनाज़े की नामज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। पहला जनाज़ा मुकर्रम अलहाज याक़ूब साहब ऑफ़ ग़ाना का है जिनका 30 अगस्त 2015 को निधन हुआ। उनकी आयु 100 वर्ष से अधिक थी। हुज़ूर-ए-अनवर ने उनकी दीर्घकालीन सेवा, शुभ लक्षण तथा संतान का वर्णन किया, उनके दो बेटे भी वाक़िफ़-ए-ज़िन्दगी हैं। एक केन्द्रीय मुबल्लिग़ हैं दूसरे लोकल मिश्नरी हैं। दूसरा जनाज़ा मुकर्रम मौलाना फ़ज़्ल-ए-इलाही बशीर साहब का है जिनकी 97 वर्ष की आयु में दिनांक 3 अगस्त 2015 को रबवा में वफ़ात हो गई थी। 1944 में ज़िन्दगी वक़्फ़ की। 1978 में रिटायरमैंट हुई। हुज़ूर अनवर ने उनके लज़्ज़ी सेवाओं के संदर्भ में फ़लिस्तीन और मारेशिस में रहते समय जिन विशेष कार्यों के करने का सौभाग्य प्राप्त किया, उसका विशेषता पूर्वक वर्णन किया। आप 1993 तक रीएज़लाई होते रहे। अन्तिम समय तक विभिन्न सेवाओं का सौभाग्य प्राप्त करते रहे। अल्लाह तआला इनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए, इनकी संतान को भी इनकी नेकियाँ जीवित रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 18.09.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*